SYNOPSIS

नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी के उपन्यासों में मिथक का तुलनात्मक अध्ययन (राम कथा श्रृंखला के विशेष संदर्भ में)

A Comparative Study of Mythology in the Novels of Narendra Kohli and Amish Tripathi (With Special Reference to Ram Katha Series)

Submitted by

Niraja. T. K
20PHHIF004

Supervisor

Dr.G.Shanthi
Associate Professor, Department of Hindi

Submitted to

Avinashilingam Institute for Home Science and Higher Education for Women
Coimbatore — 641 043

March 2024

नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी के उपन्यासों में मिथक का तुलनात्मक अध्ययन (राम कथा श्रृंखला के विशेष संदर्भ में)

मिथक दुनिया के सबसे समृद्ध पौराणिक कहानियों का एक खज़ाना है । इसका अद्भुत एवं अनूठा पहलू यह है कि सभी लोग अपने देश या समाज के इन सदियों पुरानी कहानियों से पूर्ण रूप से परिचित है । इन कहानियों को हमे बचपन में सुनाया जाता है जो कल के लिए एक अच्छे नागरिक बनने के लिए हमारे व्यक्तित्व को आकार देता है । इसके साथ मिथक किसी व्यक्ति से संबंधित विरासत या संस्कृति का निर्माण में अहम भूमिका निभाती है। मिथक और लोक कथाएँ लोगों की धर्मों का आधार बन जाती है जिनका वे सदियों से पालन करते आए हैं ।

मिथकीय कहानियों में जो बुराई और अच्छाई के बीच लड़ाई उल्लेखित है उससे हमें नैतिक मूल्य सीखने को मिलता है । मिथक पूर्वजों के लिए महत्वपूर्ण थी, आज भी महत्वपूर्ण है और हमेशा रहेगी। इसका प्रभाव इतना सशक्त है कि कई मानवीय तर्कों में भी मिथक का प्रतिबिंब छायांकित होता है । मिथक को महत्वपूर्ण मानने के पीछे का सबसे मुख्य कारण यह है कि यह एक ऐसी कहानी है जिसमें कुछ वास्तविक तथ्य शामिल है । एक ही मिथक में विश्वास करने वाले लोगों के बीच कभी-कभी एकता भी होता है । इनमें मतभेद होने की संभावना कम दिखाई देता है । मिथक को अपने आप में यथार्थ माना जाता है जो मनुष्य के अंदर कृतज्ञ एवं आशा की भावना को जगाती है । इसी कारण से मिथक का मनुष्य पर प्रभाव के संबंध में तार्किक रूप से वर्णन करना कठिन है । मिथकीय साहित्य के लेखन में विभिन्न रचनाकारों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है । उनमे नरेंद्र कोहली एवं अमीश त्रिपाठी के मिथकीय उपन्यासों पर मैंने शोध कार्य किया है ।

शोध के उद्देश्य

- नरेन्द्र कोहली और अमीश त्रिपाठी द्वारा लिखित रामचंद्र की कथा श्रृंखला की तुलना करना।
- दोनों लेखकों के मिथकीय दृष्टिकोण में साम्य - वैषम्य को समझना।
- पारंपरिक राम कथा और इन लेखकों की राम कथा में अंतर का अध्ययन करना।
- दोनों लेखकों की राम कथा की प्रासंगिकता को उजागर करना।

साहित्य समीक्षा

नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी के साहित्य लेखन से संबंधित कई सारे शोध कार्य हिन्दी और अंग्रेजी भाषा क्षेत्र में हुए हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार है -

- नरेंद्र कोहली के राम कथात्मक उपन्यास : शिल्पगत वैशिष्टय - सरोजिनी पाण्डेय, छत्रपति शाहु जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, 1998

- नरेंद्र कोहली के राम कथा मूलक उपन्यासों में पौराणिकता एवं समकालीन प्रासंगिकता - दिनेशचंद्र त्रिवेदी, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, 2005
- नरेंद्र कोहली के साहित्य में मिथक एवं यथार्थ - राव पुनीत कुमार, महात्मा गाँधी काशी विद्या पीठ, वाराणसी, 2010
- नरेंद्र कोहली के राम कथा आधारित उपन्यासों का समीक्षात्मक अनुशीलन - गुंजन शर्मा, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मीरठ, 2015
- नरेन्द्र कोहली के राम कथात्मक उपन्यास - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन - जयश्री पि, महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम, 2019
- डॉ. नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में मिथक - क्षत्रीय आरती सिंह, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद 2022
- मिथ, मॉडर्निटी एंड फिलोसोफी इन अमीश त्रिपाठी नॉवेल्स - सुनीता शर्मा, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टीबड़ेवाला यूनिवर्सिटी, राजस्थान, 2017
- रिसेप्शन ऑफ़ मिथ इन द सेलेक्ट नॉवेल्स ऑफ़ अमीश त्रिपाठी ए क्रिटिकल स्टडी - प्रीती मनसुखलाल, माधव विश्वविद्यालय राजस्थान, 2021
- मिथ अस नैरेटिव इन द सेलेक्ट वर्क्स ऑफ़ कविता कैन एंड अमीश त्रिपाठी - रूबी गुप्ता, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, 2021
- कंटेम्पोरैज़िंग रामायण - ए स्टडी ऑफ़ अमीश त्रिपाठी’स नॉवेल्स - निधी बूरा, महर्षि दयानंद यूनिवर्सिटी, रोहटक, 2022
- रीइंटरप्रेटिंग मिथ इन द सेलेक्ट वर्क्स ऑफ़ अमीश त्रिपाठी एंड अशोक. के. बैंकर - योगिनी. ए. सोलंकी, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, 2023
- सीता, राम, रावणा - ए कंटेंपोररी रीटेल्लिंग इन अमीश त्रिपाठी एंड आनंद नीलकंटन - अर्चना तनवर, गुरुकुल कांगड़ी यूनिवर्सिटी, हरिद्वार, 2023

उपर्युक्त सूची से हमें यह ज्ञान होता है कि दोनों लेखकों के साहित्य पर हिन्दी और अंग्रेजी भाषा क्षेत्र में शोध कार्य हुआ है और आज भी हो रही है, किंतु दो विभिन्न भाषा क्षेत्र के इन लेखकों के मिथक की तुलना पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है । अमीश जी की रामचंद्र श्रृंखला के चौथे उपन्यास ‘लंका का युद्ध’, 2022 दिसंबर में प्रकाशित होने के कारण इस पर भी कोई शोध परक अध्ययन नहीं हुआ है । जहाँ तक संभव है, मैंने इस विषय पर शोध अध्ययन करने का प्रयास किया है । मैंने अपने शोध कार्य को पाँच अध्याय में विभक्त किया है ।

प्रेरणा एवं सामग्री स्त्रोत

प्रेरणा: बचपन से ही रामायण और महाभारत में मेरी गहरी रुचि रही है । रामायण टी वी शो के विश्व रिकॉर्ड तोड़ने की खबर ने मेरे दिलचस्पी को फिर से जगा दिया है, जिससे इस विषय पर शोध करने की इच्छा जागृत हुई है । इसके अतिरिक्त, एक लेखक के रूप में

अमीश त्रिपाठी ने मुझे पौराणिक कथाओं की दुनिया से परिचित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे इन प्राचीन कथाओं के प्रति मेरा आकर्षण और बढ़ गया।

सामग्री स्त्रोत

- प्राथमिक स्त्रोत: नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी द्वारा लिखित राम कथा श्रृंखला के सभी उपन्यास।
- सहायक स्त्रोत: अन्य शोध कार्य, पत्र-पत्रिकाएँ, सहायक ग्रन्थ, यू ट्यूब एवं वेबसाइट।

मैंने अपने शोध कार्य को पाचँ अध्यायों में विभाजित किया है -

प्रथम अध्याय - मिथक - अवधारणा, स्वरूप एवं महत्व

प्राचीन एवं पौराणिक कथाएँ जो सदियों से चली आ रही है, और उनमें निहित विश्वास एवं रूढ़ को 'मिथक' कहा जाता है । इस अध्याय में मिथक का अर्थ, परिभाषा, विकास और प्रकार के संबंध में लिखा है । मिथक की उत्पत्ति को गहन रूप से समझने के लिए इसमे भारतीय एवं पाश्चात्य मिथक पर भी चर्चा किया गया है । हिन्दी साहित्य में मिथक का उद्भव और मिथक एवं साहित्य में संबंध पर भी इसमें प्रकाश डाला गया है ।

द्वितीय अध्याय - नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी के व्यक्तित्व एवं साहित्य सृजन

भारत अपने विविध सांस्कृतिक विरासत एवं समृद्धि के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है । नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी जैसे लेखक इस संपत्ति को हासिल करने की यात्रा में हमारी मार्गदर्शक बनते हैं । इस अध्याय में इन लेखकों के जीवन परिचय, उनके लेखन कार्य और उनको प्राप्त पुरस्कार व सम्मान के बारे में लिखा है यह अध्याय भारतीय साहित्य के दो भिन्न साहित्यिक क्षेत्र के लेखकों के व्यक्तित्व एवं सृजना संसार को समझने में सहायता करता है ।

तृतीय अध्याय - नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में मिथक - एक अवलोकन

मिथकीय के एवं पौराणिक उपन्यास सदैव नरेंद्र कोहली के लिए लेखक के रूप में प्रसिद्धि का कारण बना। नरेंद्र कोहली को आधुनिक रामकथा के सर्वश्रेष्ठ उन्नायक कहा जाता है । इस अध्याय में नरेंद्र कोहली के राम कथा श्रृंखला अभ्युदय (दीक्षा, अवसर, संघर्ष की ओर, युद्ध -1, युद्ध - 2) की कथावस्तु एवं उनके मिथकीय दृष्टिकोण का परिचय दिया गया है । राम कथा को लेकर लेखक की अलग दृष्टिकोण का इसमें संक्षिप्त विवरण दिया गया है ।

चतुर्थ अध्याय - अमीश त्रिपाठी के उपन्यासों में मिथक - एक अवलोकन

मिथक और इतिहास की सहायता से अमीश त्रिपाठी ने भूत काल की यात्रा कर भविष्य की संभावनाओं को समझने का प्रयास किया है । इस अध्याय में अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला (राम इक्ष्वाकु का वंशज, सीता मिथिला की योद्धा, रावण आर्यवर्ता का शत्रु, लंका का

युद्ध) की कथावस्तु और उनके मिथकीय दृष्टिकोण के संबंध में लिखा है । पारंपरिक रामायण को कैसे इन्होंने समकालीन समस्याओं के साथ जोड़कर लिखा है, इस पर प्रकाश डाला गया है ।

पंचम अध्याय - नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी के मिथकीय दृष्टिकोण - एक तुलना

तुलनात्मक साहित्य कई देशों, युगों, भाषाओं और शैलियों के साहित्य का अध्ययन करता है । अध्ययन के तहत संस्कृतियों के ऐतिहासिक, लिंग, आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, दार्शनिक, धार्मिक और भाषाई पहलुओं को बनाने वाले जटिल भागों को बेहतर ढंग से समझने के लिए, इस क्षेत्र के विद्वान एक दूसरे की तुलना में साहित्य का अध्ययन करते हैं । इस अध्याय में नरेंद्र कोहली एवं अमीश त्रिपाठी के राम कथा संबंधित मिथकीय दृष्टिकोण में साम्य वैषम्य पर प्रकाश डाला गया है । राम का बाल्य जीवन, पारिवारिक संबंध, पात्र परिकल्पना, गुरु की महिमा, राम रावण युद्ध का चित्रण, शीर्षक की सार्थकता, लेखन शैली, प्रकृति एवं संस्कृति का चित्रण, समसमायिक विषयों में प्रासंगिकता, उद्देश्य एवं संदेश आदि विषयों का विश्लेषण किया गया है ।

उपसंहार

मिथक, एक ऐसा ज्ञान भण्डार है, जो किसी भी देश की संस्कृति, ब्रह्मांड या मूल्यों की उत्पत्ति को समझाने का प्रयास करती है । मिथक के अर्थ में परिवर्तन आते गए और अब यह उन गाथाओं का प्रतिनिधित्व करती है, जिसे एक विशेष वर्ग या संस्कृति सत्य मानती है । ब्रह्मांड की उत्पत्ति जैसी प्राकृतिक घटनाओं को अमानुषिक एवं अलौकिक प्रक्रियाओं के ज़रिए व्याख्या देने का प्रयत्न करते हैं । प्राचीन मिथक यथार्थ से अधिक कल्पना एवं अंतर्ज्ञान के निकट है ।

मिथक दिव्य प्राणियों की सुव्यवस्थित प्रणाली है, जो पारंपरिक रूप से पारित किया जाता है । इसका किसी शासक या पुजारियों के द्वारा समर्थन होता है और यह किसी समुदाय के आध्यात्मिक या धार्मिक जीवन से जुड़े होते हैं । जब समाज के आध्यात्मिक नेतृत्व का यह संबंध टूट जाने पर पौराणिक कथाओं से लोक कथाओं में परिवर्तित हो जाते हैं । मिथक का किसी प्रमाण के द्वारा समर्थन न होने के कारण उसे खारिज कर देने की रवैया आज हमें देखने को मिलता है, किंतु मिथकीय कहानियों में निहित मूल्य एवं सीख को कोई भी खारिज नहीं कर सकता।

मनुष्य द्वारा सभ्यता के प्राप्त करने के पश्चात भी मिथकों का कई तरीकों से प्रयोग होता रहा। जैसे मानव जाति को प्राकृतिक घटनाएँ जैसे फसल उपजना एवं ऋतुओं का परिवर्तन और आपदाएँ जैसे भूकंप या तूफान के लिए एक स्पष्ट व्याख्या प्रदान। जन्म और मृत्यु जैसे जीवन की घटनाओं के संबंध में मिथक ने जवाब दिया। मनोरंजन के लिए भी इसका प्रयोग होता था। किंतु इन सभी में ब्रह्मांड निर्माण के लिए मिथक ने जो स्पष्टीकरण

दिया है वह सबसे महत्वपूर्ण है । एक अज्ञान जनता जो अपने जीवन और प्रकृति संबंधित उत्तर की तलाश में थे, उनको एक जवाब दिया है, उसकी चारों ओर क्या हो रहा था इस बात की समझ को हासिल करने के लिए मिथक ने उनके लिए एक संरचना तैयार किया।

हिंदू मिथक आज भी उतनी ही प्रसिद्ध है, जितने कि वह पहले ज़माने में हुआ करते थे और भारतीय साहित्य की एक हिस्से के रूप में शामिल है । समकालीन समाज, हिंदू पौराणिक कथाओं में जो बताया गया है, उसे एक अलग दृष्टिकोण से अपनाता हैं । इसीलिए उन रचनाओं को हिंदी मिथकीय साहित्य के पावन एवं पुनीत रचनाओं के रूप में देखने की मनोवृत्ती कम होने लगा है । उनमें तरह-तरह की रचनात्मक व्याख्याएँ होने के साथ-साथ उन कहानियों का विश्लेषण भी किया जाता है । ऐसे महाकाव्यों को इस प्रकार पुनर्लेखन किया जाता है कि उसके पात्रों की दैविक चेतना कम और मानवीय गुण ज़्यादा दिखे। इसके हर एक पात्र हर छोटे-बड़े मानवीय भावनाओं और जज़्बातों को महसूस करते हैं । यह जरूरी नहीं है कि इनके संघर्ष और लड़ाई हमेशा किसी मुख्य या बड़े उद्देश्य से प्रेरित हो । मिथक को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने का तरीका बदल गया है क्योंकि इन कथाओं का पुनः कथन एवं इन पात्रों का सार्वभौमिक यात्रा किसी एक व्यक्ति के दृष्टिकोण के माध्यम से होता है । इसमें ईश्वर के मानवीय पक्ष बाहर लिया है जिससे पाठक नए तरीकों से ईश्वर से संबंध महसूस कर सकते हैं । इनमें पात्रों की आलोचना है एवं उन पर छानबीन किया जाता है । समकालीन विचारधारा एवं मुद्दों के साथ जोड़कर उन कहानियों पर सवाल उठाया जाता है ।

नरेंद्र कोहली एवं अमीश त्रिपाठी ने मिथक का पुनः सृजन कर भारतीय कथा साहित्य में अपने लिए एक दृढ़ स्थान स्थापित किया है । प्रारंभिक भारतीय लेखकों द्वारा बनाए गए मिथकों के पारंपरिक रीतियों को उन्होंने तोड़ दिए हैं । समकालीन समाज में क्रांति लाने की आशा में कोहली जी एवं अमीश जी ने पौराणिक कथाओं को क्रांतिकारी विचारों के साथ प्रस्तुत किया है । दोनों लेखकों ने एक आदर्श समाज की स्थापना को लक्ष्य बनाकर जनता के लिए उपयुक्त आधुनिक मिथक की सृष्टि किया है, जो पारंपरिक भी है और वैज्ञानिक एवं प्रासंगिक भी।

नरेंद्र कोहली एक ऐसे लेखक थे, जिन्होंने अपनी मिथकीय रचनाओं से हिंदी साहित्य में ऐसा छाप छोड़े हैं, जिसके कारण उन्हें आधुनिक राम कथा के सर्वश्रेष्ठ उन्नायक और आधुनिक तुलसीदास कहा जाता है । आचार्य चतुर्सेन के उत्तम शासन की उदाहरण को दिखाने के लिए रावण को चुना, तो कोहली जी ने इसके लिए राम को उचित समझा। उनकी लेखन के ज़रिए रामायण के पौराणिक पात्रों, तत्वों, घटनाओं और विचारों को एक नया आयाम मिला। साहित्य में अंतर्निहित जो मिथक के वह अनुभवों का विश्लेषण करता है और कोहली जी की सफलता भी इसी बात पर निर्भर था।

अंग्रेजी भाषा में लेखन कार्य करने वाले अमीश त्रिपाठी एक समकालीन भारतीय लेखक हैं, जिन्होंने भारतीय मिथक को अंतरराष्ट्रीय स्तर में ख्याति दिलाया। उनके उपन्यासों की बिक्री लाखों में होता है जो इस बात का सबूत है कि भारतीय पौराणिक कथाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी सदियों पहले थी, अंतर सिर्फ इतना है कि इसको प्रस्तुत करने की शैली बदल रही हैं ।

नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी ने भारतीय मिथक के लिए बहुत बड़ा योगदान दिया है । दोनों लेखकों ने रामायण का समसमायिक चित्रण कर समकालीन विश्व में पौराणिक कथाओं की प्रासंगिकता को वापस ले आए हैं ।

मैंने अपने शोध कार्य में नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी द्वारा लिखित राम कथा श्रृंखला का तुलनात्मक अध्ययन किया है । इनकी तुलना करने के बाद में इस निष्कर्ष पर पहुँची हूँ कि दोनों लेखकों के राम कथा श्रृंखला के प्रकाशन के बीच बहुत बड़ी समय का अंतराल है । इसके बावजूद भी इनमें आश्चर्यजनक रूप से समानताएँ पायी जाती हैं । इसमें कई सूक्ष्म अंतर भी हैं जैसे -

- अमीश जी की रामचंद्र श्रृंखला में विश्वामित्र और वशिष्ठ के बीच जो शत्रुता है, इसका प्रभाव अन्य पात्रों के जीवन पर भी पड़ता है, किंतु कोहली जी की अभ्युदय में इसका केवल एक प्रसंग में उल्लेख हुआ है । विश्वामित्र और वशिष्ठ के बीच जो मतभेद है, वह किसी पात्र के चरित्र पर या कथा की प्रवाह पर किसी तरह का प्रभाव नहीं डालता।
- कोहली जी एवं अमीश जी ने रामायण के पात्रों के बीच के संबंध को अलग रूप से देखा है । कोहली जी के लक्ष्मण अपने भाई भरत पर भरोसा नहीं कर पाता, वह दूसरी तरफ अमीश जी की राम कथा में रावण और सीता के बीच भी अंत में मित्रता की भावना जागती है ।
- नरेंद्र कोहली ने कहीं भी पुष्पक विमान का उल्लेख नहीं किया और अमीश जी ने पुष्पक विमान जैसा जादुई तत्व को हटाकर वैज्ञानिक रूप से समझाया है । इन दोनों के यह दृष्टिकोण आज की पीढ़ी के साथ मेल खाता है ।
- राम का चित्रण सिर्फ धैर्यवान पात्र के रूप में नहीं हुआ है, उनके भावनात्मक पक्ष को भी दिखाया है । सीता को एक मज़बूत स्त्री पात्र के रूप में दिखाया है जो कोहली जी की राम कथा में इंद्र पुत्र जयंत से आत्मरक्षा के लिए अकेली लडती है, अमीश जी के राम कथा में एक देश को संभालती हुई राजनीतज्ञ के रूप में चित्रित हुआ है जो आधुनिक महिलाओं के लिए एक प्रेरणादायक छवि का प्रतिनिधित्व करती है । अमीश जी ने खलनायक रावण को भी, बल्कि एक संघर्षशील व्यक्ति के रूप में दिखाया है, जो आज की दुनिया के लिए एक सबक पेश करता है । ....
- नरेंद्र कोहली ने राम को एक ऐसे राजकुमार के रूप में चित्रित किया है जो उत्पीड़ित जनता, श्रमिक वर्ग और प्रताड़ित दलित महिलाओं की अधिकार उनकी स्वतंत्रता और

बेहतर जीवन स्थितियों के लिए लड़ते हैं । दूसरी ओर, अमीश त्रिपाठी के राम, अपराध विभाग की उत्तरदायित्व अपने कंधों पर लेते हैं । कानून और व्यवस्था को सख्ती से लागू करने के माध्यम से अयोध्या में अपराध दर को काफी कम करते हैं, जिससे अयोध्या में शाँति और संतुष्टि आती है ।

- अमीश त्रिपाठी के रावण एक बच्ची को वेश्यावृत्ति में धकेले जाने से बचाते है, जो रामायण कथा में एक नया आयाम जोड़ता है । यह चित्रण रावण के मानवीय पहलू को उजागर करता है, जिसे पारंपरिक रूप से भारतीय महाकाव्यों में एक सकारात्मक पात्र के रूप में दर्शाया गया है । यौन शोषण जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ उनके रुख को प्रदर्शित करके, अमीश जी इस प्रतिष्ठित चरित्र पर एक अलग दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो खलनायक के रूप में उनके सामान्य चित्रण से परे हैं ।
- नरेंद्र कोहली की रामायण प्रस्तुति में, सीता की बहन और लक्ष्मण की पत्नी, उर्मिला का उल्लेख नहीं हुआ है । कोहली जी का लक्ष्य संभवत: लक्ष्मण के चौदह साल के जंगल में वनवास के दौरान अयोध्या में अपना जीवन छोड़ने के अतिरिक्त बोझ या अपराध बोध के बिना सेवा करने के समर्पण को चित्रित करना था।

रामायण के हर पात्रों के चरित्र हमें कुछ न कुछ सबक देते हैं । वाल्मीकि जी के रामायण हमें यह सिखाते हैं कि राम जैसे पूजनीय व्यक्ति में भी खामियाँ हो सकती हैं । इसके बावजूद, राम शाँत रहते हैं, कभी निराशा के आगे नहीं झुकते या भाग्य को दोष नहीं देते। सीता एक साहसी महिला के रूप में उभरती हैं, जो एक कर्तव्यपरायण पत्नी के रूप में अपनी भूमिका निभाने के लिए महल के आराम को स्वेच्छा से त्याग देती है, और रावण द्वारा अपहरण किए जाने पर धैर्यपूर्वक अपनी आत्मरक्षा करती है । नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी ने रामायण कथा के भीतर नई प्रसंगों को गढ़ते हुए कुशलतापूर्वक वाल्मिकी रामायण के प्रत्येक चरित्र के सार को भी बनाए रखा हैं । रामायण के पात्रों के जीवन में नए संदर्भों को लाने के बावजूद, इन लेखकों ने यह सुनिश्चित किया हैं कि पात्रों के मूल व्यक्तित्व अपरिवर्तित रहें।

भारत की आध्यात्मिकता और दर्शन में निहित सांस्कृतिक विरासत का सार, भविष्य के लिए एक महत्वपूर्ण नींव रखता है । पौराणिक संतों की विरासत, आत्मा की अमरता में विश्वास और गहरी धार्मिक और दार्शनिक समझ इसका मूल है । जैसा कि हम एक आशाजनक भविष्य के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करते हैं, यह ज़रूरी है कि अतीत की उपेक्षा न करें, क्योंकि यह हमारे कल को आकार देता है । दुख की बात है कि प्रगति की हमारी खोज में, सांस्कृतिक विरासत के महत्व को अक्सर भविष्य के बारे में चर्चाओं में नजरअंदाज कर दिया जाता है, चाहे वह आर्थिक संदर्भ में हो या सामाजिक संदर्भ में। इन सांस्कृतिक जड़ों को संरक्षित करना और उन्हें अगली पीढ़ियों तक सुरक्षित रूप से ले जाना एक उत्तरदायित्व है, जिसे नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी ने निभाया है ।

दुनिया में कुछ ही ऐसे लेखन कार्य होते है जो सार्वभौमिक रूप से लोगों को प्रभावित कर सकते हैं । जब कोई साहित्यिक कार्य किसी एक भाषा क्षेत्र पर ही सफल होती हैं, तब भी वह लेखक के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है । किंतु जब पुस्तक का कई भाषाओं में अनुवाद किया जाता है और सार्वभौमिक रूप से इसका अध्यन होने लगता है, तो यह लेखक के लिए जीवन भर का पुरस्कार बन जाता है । ऐसे पुस्तकों को विश्व साहित्य की श्रेणी में रखा जाता है, वे सभी पीढ़ियों के लिए उपयुक्त है और सार्वभौमिक सार रखती है । विश्व साहित्य में कवियों को प्रेरित करने की क्षमता कुछ ही लेखकों में होती है । वे विभिन्न संस्कृतियाँ एवं नैतिक मूल्य प्रदान करते हैं । वाल्मिकी, अमर महाकाव्य रामायण की रचना कर उस सार्वभौमिक स्तर पर पहूँच गए है । ऐसा माना जाता है कि वह पूर्वोत्तर भारत में रहते थे। संत कवि बनने से पहले वे एक चोर थे। रामायण ही एकमात्र ऐसी कृति है जो उन्हें काव्य प्रतिभा युक्त कवि के साथ महात्मा बना दिया है । वह नैतिक जीवन के प्रति शुद्ध एवं परिष्कृत विचार रखने वाले व्यक्ति बन जाते हैं ।

'धर्म' पर रामायण हमे जो शिक्षाएँ देती है, वह आज की दुनिया में महत्वपूर्ण हैं जहाँ सफलता की निरंतर खोज में मूल्य अक्सर पीछे रह जाते हैं । कलियुग के इस भ्रष्ट युग में, पारिवारिक सम्मान में गिरावट आती है, और शिक्षक अपना पूजनीय दर्जा खो देते हैं । फिर भी, महाकाव्य का कालातीत ज्ञान हमें सामाजिक पवित्रता, पारिवारिक महत्व और व्यक्तिगत पहचान की ओर वापस ले जा सकता है । भारत की सांस्कृतिक विरासत सामंजस्यपूर्ण अस्तित्व के लिए सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर गहराई से ज़ोर देना आवशयक है ।

मूल्यों को समझने का सबसे आसान तरीका रामायण का अध्ययन करना है । बहुत से लोग महाकाव्य तो पढ़ते हैं, लेकिन कुछ ही लोग वास्तव में उनके अर्थ को समझते हैं । इन मूल्यों को सिर्फ जानना पर्याप्त नहीं है, हमें इनका पालन भी करना चाहिए । ज्ञान तभी उपयोगी होता है जब उसे वास्तविक जीवन में लागू किया जाए। आजकल, हम तथ्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं लेकिन यह भूल जाते हैं कि मूल्यों का जीवन में क्या प्रभाव हो सकते हैं । राम और रावण दोनों ही ज्ञानी थे, लेकिन राम की महानता अपने ज्ञान को लागू करने से आई और रावण ऐसा करने में असफल रहे। इसलिए भविष्य के लिए रामायण के मूल्यों को याद रखना और उनके अनुसार जीना महत्वपूर्ण है ।

रामायण का स्थायी प्रभाव परंपराओं की शाश्वतता को दर्शाता है, जिसने पश्चिमी देशों में भी व्यापक प्रभाव डाला है । महात्मा गाँधी ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महाकाव्य की प्रासंगिकता पर ज़ोर देते हुए 'रामराज्य' को लोकप्रिय बनाया। वाल्मिकी रामायण की प्रस्तुति में निहित कई राम कथा संस्करण मौजूद हैं, जिनमें से प्रत्येक संस्करण अपनी विशिष्टता जोड़ते हैं । रामचरितमानस 'राम' नाम की दिव्य प्रकृति से परे है, जिसके जप मात्र से पाप धुल जाते हैं ।

रामायण को अपने जीवन का हिस्सा बनाने से तनाव और अवसाद भरे इस युग में शांति आ सकती है । सद्भाव के लिए राम एक अनुकरणीय आदर्श पात्र है । समकालीन समाज को रामायण में निहित धर्म की अवधारणा को क्रियान्वित करने की आवश्यकता है । समय तीव्र गति से बदल रहा है, राम जैसे आज्ञाकारी चरित्र आज सुलभ नहीं है । आदर, कृतज्ञता, भक्ति आदि मनुष्य के अंदर कम होती जा रही है । मनुष्य की हृदय में प्यार एवं सम्मान के स्थान पर अपराध और द्वेष वास करता है । रामायण व्यक्ति का वास्तविक पहचान, परिवार को संस्कार और समाज को पवित्रता प्रदान कर सकती है । भ्रष्टाचार से भरी इस दौर में रामायण की शिक्षाएँ देना आवश्यक है । हमें रिश्तों की अहमियत के बारे में विस्तार से सिखाती है । रामायण में सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य समाहित है ।

नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी के मिथकीय दृष्टिकोण को समझने के लिए मैंने इनकी राम कथा श्रृंखला का सहारा लिया है । शोध की सीमा को ध्यान में रखते हुए मैंने अपने शोध कार्य को पूर्ण करने का प्रयास किया है । परंतु यह शोध अपने आप में पूर्ण ही होता है, ऐसा नहीं है । इनके साहित्य के आधार पर भविष्य में और भी शोध कार्य हो सकते हैं । जैसे -

1. नरेंद्र कोहली एवं अमीश त्रिपाठी के मिथकीय उपन्यासों में धर्म - एक तुलनात्मक अध्ययन।
2. नरेंद्र कोहली की महासमर की समसामयिक महत्व का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।
3. अमीश त्रिपाठी के शिव रचनात्रय और शिव पुराण का एक तुलनात्मक अध्ययन।
4. नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी की राम कथा श्रृंखला में सामाजिक यथार्थ।
5. भारतीय भाषाओं की मिथकीय रचनाओं में तुलनात्मक अध्ययन।

मैं आशा करती हूँ कि मेरा शोध एक द्वार के रूप में काम करेगा जो कई संभावित शोध अध्ययनों को उजागर करने में सहायता करें, जो समकालीन दुनिया में रामायण के पुनः कथन के महत्व समाज को समझाये और यह सीख दे कि कैसे रामायण जीवन को गहराई से प्रभावित कर सकता है, जैसे इस शोध कार्य ने मेरे जीवन को प्रभावित किया है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

क्र. सं.	लेखक	पुस्तक का नाम	प्रकाशक
1.	अमीश त्रिपाठी	लंका का युद्ध	वेस्टलाण्ड पब्लिकेषन्स, चेन्नई, 2022
2.	नरेंद्र कोहली	अवसर	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021
3.	अमीश त्रिपाठी	सीता मिथिला की योद्धा	वेस्टलाण्ड पब्लिकेषन्स, चेन्नई, 2019
4.	अमीश त्रिपाठी	रावण आर्यवर्ता का शत्रु	वेस्टलाण्ड पब्लिकेषन्स, चेन्नई, 2019
5.	अमीश त्रिपाठी	राम इक्षवाकु के वंशज	वेस्टलाण्ड पब्लिकेषन्स, चेन्नई, 2018
6.	नरेंद्र कोहली	दीक्षा	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016
7.	नरेंद्र कोहली	संघर्ष की ओर	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
8.	नरेंद्र कोहली	युद्ध भाग - 1	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
9.	नरेंद्र कोहली	युद्ध भाग - 2	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012

सहायक ग्रंथ सूची

क्र. सं.	लेखक / संपादक	पुस्तक का नाम	प्रकाशक
1.	विनय विश्वास	तुलसी दास की काव्य शक्ति	नए किताब प्रकाशन, 2022
2.	डॉ. अमिल कुमार तिवारी	मिथक और साहित्य विविध संदर्भ	इंडिया नेट्बूक, 2021
3.	वाल्मिकी	श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण	गीता प्रेस, गोरखपुर, 2021
4.	अमीश त्रिपाठी	धर्म	वेस्टलाण्ड पब्लिकेषन्स, चेन्नई, 2020
5.	नरेंद्र कोहली	रामकथा	हिंदी पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, 2018
6.	डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय	साहित्य और संस्कृति	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2017
7.	डॉ. देवदत्त पट्टनायक	मिथक - हिंदु आख्यानों को समझने का प्रयास	पेंगुइन बुक्स इंडिया, 2015
8.	डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार	भारतीय संस्कृति का विकास	श्री सरस्वती सदन, दिल्ली, 2014
9.	बाल कृष्ण राव	भारतीय संस्कृति के सौपान	सुनीता प्रकाशन, जयपुर, 2014
10.	डॉ. रीज आर. एस	नरेंद्र कोहली के उपन्यास आधुनिकता के संदर्भ में	गोविन्द पचौरी, जवाहर पुस्तकालय, 2014
11.	तुलसीदास	श्री रामचरितमानस	गीता प्रेस, उत्तर प्रदेश 2014

12.	प्रकाश परिमल	भारतीय दर्शन और संस्कृति का मेरुदंड : वेद	जयपुर पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2013
13.	लीलाधर शर्मा ‘पर्वतीय’	भारतीय संस्कृति कोश	राजपाल एंड सन्ज़ दिल्ली, 2013
14.	विजय लक्ष्मी मेहन्त	कामायनी का जीवन दर्शन	अमर प्रकाशन, मथुरा, 2013
15.	चेतन शर्मा	भारत के धर्म संप्रदाय	दीपक ऑफसेट्, दिल्ली 2013
16.	डॉ. जयंती प्रसाद भौटियल	धर्म, विज्ञान और समाज	मानसी पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2012
17.	स्वामी करापत्री जी महाराज	रामायाणमीमांसा	श्री धानुका प्रकाशन कलकत्ता, 2012
18.	सचिन प्रखान	प्राचीन भारत की कला और संस्कृति	नवदीप पॉकेट बुक्स, दिल्ली, 2012
19.	होमर	ओडिसी	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
20.	डॉ लीना बी. एल	मिथक नाटक और रंगमंच	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2012
21.	डॉ. के. सी. सिन्धु	रामकथा कालजयी चेतना	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
22.	होमर	इलियड़	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
23.	डॉ. प्रदीप सी. लाड़	नरेंद्र कोहली के उपन्यासों का अनुशीलन	अभय प्रकाशन, कानपुर, 2012
24.	छबील कुमार मेहेरे	तुलनात्मक साहित्य	शबनम पुस्तक महल, ओडिशा, 2011
25.	डॉ. शिवकुमार शर्मा	हिंदी साहित्य; युग और प्रवृत्तियाँ	अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 2011
26.	कर्तार सिंह दुग्गल	भगवान है कि नहीं	शिलालेख, सुभाष बाली, दिल्ली, 2011
27.	चंद्रकांत बांदिवेड़कर	भारतीय साहित्य पर महाभारत का प्रभाव	आर्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली, 2011
28.	राना	युद्ध के विरुद्ध	संरचना प्रकाशन मंदिर, 2010
29.	डॉ. पी. संजयन	मुक्तिबोध काव्य संरचना का रस संदर्भ	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2010
30.	डॉ. उमाशंकर शुक्ल	तुलसी काव्य में लोक तत्व	सुरभी प्रकाशन, इलाहबाद, 2010
31.	दुर्गा प्रसाद गुप्त	आस्थाओं का कोलाज़, रामशरण जोशी के लेखन में से एक चयन	ज्योत्सना प्रकाशन, दिल्ली, 2010
32.	डॉ देवनारायण यादव	वाल्मीक रामायण में गृहस्थ जीवन	कला प्रकाशन, वाराणसी, 2010
33.	डॉ. प्रभाकरन हेब्बार	संस्कृति, भाषा और साहित्य	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2009

34.	नरेन्द्र कोहली	नरेन्द्र कोहली ने कहा	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
35.	ए. अरविन्दाक्षन	साहित्य, संस्कृति और भारतीयता	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2008
36.	रमेश कुंतल मेघ	मिथक से आधुनिकता तक	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
37.	डॉ. बदरीनाथ कपूर	बृहद हिन्दी - अंग्रेजी कोश	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2007
38.	डॉ. नाथूराम राठौर	हिंदी राम काव्य के पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2007
39.	डॉ. प्रमोद कुमार अग्रवाल	चित्रकूट में राम - भरत मिलाप	पीताम्बरा बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, 2007
40.	डॉ जयदेव सिंह यादव	मत्स्य पुराण में हिन्दू देवी देवताओं का सामाजिक अध्ययन	नवराज प्रकाशन, भजनपुरा, दिल्ली, 2006
41.	ऋचा मिश्रा	साकेत समीक्षा	विकास प्रकाशन, कानपुर, 2005
42.	उषा पुरी	भारतीय मिथक कोश	नाषणल पब्लिषिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2004
43.	स्वामी विवेकानंद	ब्रह्मांड विज्ञान	प्रतिमा प्रकाशन, दिल्ली, 2004
44.	ब्रजभूषण राजवंशी	मुख्य धर्मों का आदि स्रोत	चेतन साहित्य मंदिर, नई दिल्ली, 2004
45.	डॉ. पुरुषोत्तम वाजपेयी	विनय पत्रिका के विविध आयाम	गरिमा प्रकाशन, कानपुर, 2004
46.	डॉ. सर्वेपल्ली राधा कृष्णन	भारतीय संस्कृति कुछ विचार	सरस्वती विहार, 2004
47.	डॉ. पी. जयरामन	भक्ति के आयाम - कृष्ण भक्ति साहित्य	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003
48.	राजा प्रताप सिंह	रामायण प्रश्नोत्तरी	राष्ट्र धर्म प्रकाशन, 2002
49.	डॉ. उषा जैन	छायावादोत्तर हिन्दी काव्य में बिंब विधान	विकास प्रकाशन, कानपूर 2002
50.	डॉ पूर्णिमा केडिया	हिंदी राम काव्य में नारी	जया भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002
51.	डॉ. रामअवतार पाण्डेय	तुलसी कृत विनय पत्रिका का काव्यशास्त्रीय अध्ययन	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणासी, 2001
52.	डॉ. अहमद हुसैन	भारतीय कृष्ण काव्य में श्रृंगार	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2001
53.	बी. लक्ष्म्यया शेट्टी	साकेत - गाइड	लक्ष्मी हिंदी विद्यालय, लालपेट, गुटूर, 2001
54.	डॉ. वी. एन. फिलिप	मध्यकालीन हिंदी भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2000
55.	नारायण चंद्र राणा	ग्रहण : मिथक और यथार्थ	विज्ञान प्रसार, नई दिल्ली, 1999
56.	प्र. ग. सहस्रबुद्धे	लुप्त वैदिक सरस्वती	राष्ट्रधर्म प्रकाशन, लखनऊ, 1999
57.	बाल्मीकि प्रसाद सिंह	संस्कृति, राज्य, कलाएँ और उनसे परे	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999

58.	डॉ. दुर्गादास काशीनाथ संत	शोध विज्ञान कोश	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996
59.	प्रो. जी. बी. कानूनगो	सत्य रामायण	हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली, 1995
60.	डॉ. गोविन्द चातक	संस्कृति : समस्या और संभावना	तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994
61.	लू शून	कला, साहित्य और संस्कृति	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994
62.	डॉ. रवींद्र कुमार सिंह	संत काव्य की सामाजिक प्रासंगिकता	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994
63.	निर्मला जैन	पाश्चात्य साहित्य चिंतन	राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली,1990
64.	बी. एच. राजूरकर, डॉ. राजमाल बोरा	तुलनात्मक अध्ययन, स्वरूप एवं समस्याएँ	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990
65.	डॉ. शीला राजवर	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में नारी के बदलते संदर्भ	ईस्टर्न बुक लिंकर्स, 1989
66.	श्री. एस. पी वर्मा	विश्व के विविध धर्म	दयालबाग एजुकेशनल गुप्त इंस्टिट्यूट, आगरा 1989
67.	डॉ. नगेन्द्र	मिथक और साहित्य	नाषणल पब्लिषिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1987
68.	इंद्रनाथ चौदरी	तुलनात्मक साहित्य की भूमिका	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1983
69.	मान्धाता सिंह	विज्ञान और वेदान्त	ज्ञान विज्ञान प्रकाशन, बिहार, 1981
70.	डी डी कोसांबी	मिथक और यथार्थ	दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटड , 1976
71.	भवभूति, जय कृष्ण हरीदार गुप्ता	उत्तरा रामचरिता	द चौकम्भा संस्कृत सीरीज़ ऑफिस, 1953
72.	Edith Hamilton	Mythology Timeless Tales of Gods and Heroes	Black Dog & Leventhal Publishers, New York, 1942
73.	डॉ. वीरेंद्र सिंह	मिथक दर्शन का विकास	स्मृति प्रकाशन, इलाहबाद, 1884
74.	श्री गुरुदत्त	वेद और वैदिक काल	शाश्वत संस्कृति परिषद, नई दिल्ली, 1675
75.	डॉ. रामेश्वर दयाल	मध्ययुगीन कृष्ण - भक्ति परंपरा और लोक संस्कृति	हरिराम द्विवेदी, पाण्डुलिपि प्रकाशन, दिल्ली 1675
76.	रीमा तिवारी	हमारे अवतार एवं देवी - देवता	रीमा तिवारी, दिल्ली

पत्र - पत्रिकाएँ

क्र. सं.	लेखक	लेख का शार्षक	पत्रिका	ISSN No.	अंक	वर्ष
1.	डॉ. रेखा उप्रेती	मिथक और साहित्य	साहित्य कुन्ज	2292 -9754	186	2021
2.	नंदिता. यु. एम	उर्मिला - द फॉरगॉटन हेरोइन: रीरीडिंग रामायण	रिसर्च जर्नल ऑफ़ इंग्लिश लांग्वेज एण्ड लिटरेचर	2321 - 3108	9	2021
3.	सुरेश भाई पटेल	वाल्मीकि रामायण में पुराकल्पन	ट्वर्ड्स एक्सीलेंस	0974 - 035X	2	2020
4.	वालेनीरा गंबेरी	एस्केपिंग फ्रॉम रामा	टेलर एंड फ्रांसिस	354 - 372	15	2014
5.	हेमंत शर्मा	रामायण “प्रबंध का मूल” विजयसूत्र अभिप्रेरणा	रिसर्च जर्नल ऑफ़ ह्युमानिटीस	0975 - 6795	3	2012

S.NO	WEBSITE
1.	https://sacred-texts.com/cla/gpr/gpr06.htm
2.	https://www.youtube.com/watch?v=MiWhO8-Agjo&t=134s
3.	https://www.youtube.com/watch?v=HeX6CX5LEj0&t=310s
4.	https://timesofindia.indiatimes.com/topics/amish-tripathi
5.	https://timesofindia.indiatimes.com/topic/narendra-kohli
6.	https://yourstory.com/hindi/7ff9dea0b3-narendra-kohli-is-the
7.	https://apkaakhbar.in/dr-narendra-kohli/
8.	https://youtu.be/bAKOWxDmGLI?si=_Xmc8U-GcaFo61a9
9.	https://youtu.be/MgyUBIJXjsQ?si=oDfUV9ylRUYUAWO
10.	https://youtu.be/Ri-AoKE42rw?si=lJaiCRH0H5T_Um1G
11.	https://youtu.be/EY8yI_JaGWQ?si=IQRm8l3kkDJpcDXM
12.	https://youtu.be/2oxzmJPoRu8?si=jsLt07WACHjVvMkF
13.	https://youtu.be/yMTX_woOjcs?si=dcP4spZkTHca_bNU
14.	https://youtu.be/eNGbTMYvq4Q?si=Q5NnA3PVnajfdEEP
15.	https://youtu.be/Xgz_WCa-0s4?si=DRIpStY4cnRmkYts
16.	https://youtu.be/Dq4NtNZg3nI?si=OJr1RnLS7aYRbkZ2
17.	https://youtu.be/IyrZZD29Jyo?si=_cG5aobxI02lkfQI
18.	https://youtu.be/nPo81UV6p4U?si=60_zk9GxT65LxDp_
19.	https://youtu.be/PNkqugI6rKI?si=FbAstIfN5f-C0YNT
20.	https://www.jstor.org/stable/29791159?read-now=1#page_scan_tab_contents
21.	https://www.jstor.org/stable/40014906?read-now=1#page_scan_tab_contents
22.	https://rrjournals.com/index.php/rrijm/article/view/144